M. A. Semester - I
Philosophy CC - 03

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Theory of Knowledge of Plato
(Part - I)

Plato की ज्ञान मीमांसा उसके पूर्ववर्ती दार्शनिकों जैसे प्रोटागोरस, सोफिस्टो तथा सुकरात आदि विचारकों की ज्ञान सम्बन्धी विचारधारा की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न होती है। उसके ज्ञान मीमांसा के दो पक्ष है— नकारात्मक और भावात्मक। नकारात्मक पक्ष के अन्तर्गत वह अपने पूर्ववर्ती ज्ञान के दो सिद्धान्तों एक 'Knowledge is Perception' और दूसरा 'Knowledge is opinion' का खण्डन करता है और तत्पश्चात भावात्मक पक्ष के अन्तर्गत वह अपने 'ज्ञान सिद्धान्त' की स्थापना करता है जो सुकरात के ज्ञान सिद्धान्त का संशोधित रूप है।

Plato की ज्ञान मीमांसा के नकारात्मक पक्ष का उद्देश्य है कि जब ज्ञान के गलत सिद्धान्तों का खण्डन कर दिया जाएगा तो सत्य ज्ञान प्रकट हो जाएगा। अतः वह पहले प्रोटागोरस तथा सोफिस्टो के ज्ञान सिद्धान्त "Knowledge is perception" के खण्डन के लिए निम्नलिखित तर्क देता है—

(1) उक्त सिद्धान्त का सार यही रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति विशेष (Individual) के लिए जो सत्य है वह उसके लिए सत्य है किन्तु Plato के अनुसार इस सिद्धान्त को किसी भी हालत में हमारी भविष्य की घटनाओं के लिए सत्य नहीं माना जा सकता। यदि किसी को यह स्पष्ट हो कि अगले वर्ष वह न्यायधीश हो जाएगा तो यह मात्र कल्पना ही होगी, क्योंकि सम्भव है वह

व्यक्ति ही प्रतिमान हो जाएगा, प्रत्येक व्यक्ति की धारणा। अतः सत्य ज्ञान की सम्भावना स्थापित नहीं होती।

(२) Plato के अनुसार यदि प्रत्यक्ष को 'प्रत्यक्ष ज्ञान' को ही ज्ञान माना जाए तो प्रत्येक प्रत्यक्ष को ही प्रामाणिक मानना पड़ेगा, जो व्यावहारिक स्थिति में विरोधाभास है। जैसे एक ही रंग को किसी विशेष दूरी से देखने, किसी एक व्यक्ति को अलग-अलग प्रकाश की स्थिति में किसी रंग के दिखाई दे सकता; तो किसी को लाल दिखाई दे, तो किसी को भिन्न लगता है। अतः एक प्रत्यक्ष को सत्य तो दूसरे को भिन्न प्रत्यक्ष को असत्य माना जाए, परन्तु ऐसा नहीं होता, क्योंकि प्रत्यक्ष में परस्पर विरोधी स्थिति है।

(३) Plato के अनुसार उक्त सिद्धान्त को मान लेने से सभी प्रकार की शिक्षा, व्यवस्था और प्रमाण आदि अस्वीकार होंगे। क्योंकि प्रत्यक्ष ही ज्ञान है तो एक व्यक्ति का ज्ञान दूसरे लिए अलग होगा और ऐसी स्थिति में उपदेश और शिक्षा की शिक्षा व्यर्थ होगी और इस आधार पर प्रोटागोरस का सिद्धान्त भी अविश्वसनीय हो जाता है।

(४) Plato के अनुसार प्रोटागोरस प्रत्यक्ष को सत्य ज्ञान मानकर इस निष्कर्ष पर आता है कि मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदण्ड है किन्तु उसका यह मत इस मान्यता पर आधारित है कि मनुष्य जीव है, परन्तु जीव तो अन्य भी होते हैं, अतः वे भी प्रत्यक्षकर्ता होने से मनुष्य के समान ही वस्तुओं की माप होंगे। किन्तु यह बात स्वयं प्रोटागोरस को भी मान्य नहीं होगा।

(५) Plato के अनुसार Protagoras (प्रोटागोरस) का उक्त सिद्धान्त आत्मव्याघाती है, क्योंकि इसकी मान्यता है कि व्यक्ति विशेष को जो सत्य प्रतीत होता है, वह उसके लिए सत्य है। अतः यदि किसी व्यक्ति को प्रोटागोरस का सिद्धान्त असत्य प्रतीत हो तो प्रोटागोरस को अपने सिद्धान्त को असत्य

मानना पड़ेगा। इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान व्यवहारिक (opinion) ज्ञान होते हैं।

(6) ज्ञान के प्रत्यक्ष मानने के सत्य की वस्तुनिष्ठता समाप्त हो जाती है और साथ ही यह सिद्धान्त सत्य असत्य के बीच भिन्नता को अर्थहीन बना देता है। एक प्रकार की वस्तु एक ही समय सत्य असत्य होती है। हमारे लिए यह सत्य तो दूसरे के लिए असत्य हो सकता है। अतः यह कहने में कोई अन्तर नहीं है कि एक ही प्रति सत्य असत्य दोनों ही है। इससे यह साबित होता है कि ज्ञान के प्रत्यक्ष को मानना संगत नहीं है।

(7) Plato का तर्क है कि प्रत्यक्ष ज्ञान में भी केवल ज्ञानेन्द्रियों पर आधारित नहीं होना पड़ता है। मान लिया जाए जब हम कहते हैं कि This is a book तो यह प्रत्यक्ष ज्ञान है लेकिन यदि ध्यान से देखें तब इसे भी शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं कहेंगे। सर्वप्रथम इस तरह के प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए हमें कागज के इस टुकड़े की तुलना कागज के दूसरे रंग के टुकड़े से करनी पड़ती है। इस प्रकार इस तरह के ज्ञान के लिए तुलना तथा वर्गीकरण करना पड़ता है। लेकिन तुलना करने का काम और वर्गीकरण करने का काम हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ नहीं कर सकती, बल्कि इस तरह का ज्ञान बुद्धि के आधार पर होता है। इससे यह साबित होता है कि शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान सम्भव नहीं है।

अतः Plato यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि ज्ञान न तो प्रत्यक्ष है, न विचार, बल्कि ज्ञान बुद्धि है।

W. T. Stace ने लिखा है — " Knowledge must be full and complete understanding rational comprehension and not mere instinctive belief. It must be grounded on reason and not on faith ......" (A Critical Hist. Of Greek Philosophy) Page no. 181

इस प्रकार हम देखते हैं कि Plato न तो प्रत्यक्ष को ज्ञान मानते हैं न ही विचार को, बल्कि इनके अनुसार ज्ञान का आधार बुद्धि है। इससे ऐसा लगता है कि Plato सुकरात के सिद्धान्त को स्वीकारते हैं। W.T. Stace ने लिखा है —

"....... Plato adopts without alternation the socratic that all knowledge is knowledge through concepts ......"

To be continued —